an>

Title: Need to review the closure of Dhanbad-Chandrapura railway line.

श्री रवीन्द्र कुमार पाण्डेय (गिरिडीह) ः 15 जून, 2017 से पूर्व-मध्य रेलवे अंतर्गत धनबाद-चन्द्रपुरा, जिसे डी.सी. लाइन के नाम से भी जाना जाता है, को रेलवे लाइन के नीचे आग होने के कारण दुर्घटना की आशंका के मद्देनज़र बंद कर दिया गया। रेलवे लाइन बंद होने से 34 कि.मी. के अंदर 14 स्टेशन एवं हॉल्ट के आस-पास करीब 5 लाख से भी ज्यादा की जनसंख्या प्रभावित हुई है। इस रूट पर औसतन प्रतिवर्ष करीब एक करोड़ से अधिक यात्री यात्रा करते हैं। यह रूट झारखंड की राजधानी रांची को संथाल परगना सहित अन्य राज्यों से जोड़ती है। इस रूट पर कुल 26 जोड़ी एक्सप्रेस/पैसेंजर ट्रेनें चलती थीं। रेल लाईन बंद होने के बाद 19 ट्रेनों को स्थायी तौर पर बंद कर दिया गया और 7 ट्रेनों को परिवर्तित मार्ग से चलाया जाता रहा है। इससे जहां इस क्षेत्र के लोगों में व्यापक आक्रोश है एवं विभिन्न पार्टियों/संगठनों द्वारा आंदोलन किया जा रहा है, वहीं रेलवे को करोड़ों रूपयों के राजस्व का नुकसान होने का अनुमान है। उक्त रेलखंड के बंद होने से बी.सी.सी.एल. के विभिन्न परियोजनाओं से उत्पादित कोयले की ढुलाई प्रभावित हुई है। इस क्षेत्र से देश के विभिन्न पावर प्लांटों सहित अन्य राज्यों को भेजे जाने वाला कोयला पूर्णतः बंद है जिससे बी.सी.सी.एल. को अब तक करोड़ों रूपये का नुकसान हो चुका है। धनबाद-चन्द्रपुरा रेल खंड का पूरा भाग अग्नि प्रभावित नहीं है, फिर डायवर्जन का निर्माण बंद करने से पहले क्यों नहीं किया गया, जो आज करने की बात की जा रही है? जब वर्षों से इस रेलखंड के नीचे आग होने की जानकारी रेलवे को थी, तो क्यों नहीं परिवर्तित मार्ग का निर्माण अथवा डायवर्जन का निर्माण रेल लाईन को बंद किए जाने से पहले किया गया?

मेरा सरकार से आग्रह होगा कि रेल लाइन बंद किए जाने पर पुनः विचार किया जाए। साथ ही, डायवर्जन/ नया रेलवे लाइन बिछाने का कार्य प्राथमिकता के आधार पर करवाने सहित बंद की गई सभी ट्रेनों को परिवर्तित मार्ग से चलाया जाए।